अपठित गद्यांश

अपठित का अर्थ होता है 'जो पढ़ा नहीं गया हो'। यह किसी पाठ्यक्रम की पुस्तक में से नहीं लिया जाता है। यह कला, विज्ञान, राजनीति, साहित्य या अर्थशास्त्र, किसी भी विषय का हो सकता है। इनसे सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाते हैं। इससे छात्रों का मानसिक व्यायाम होता है और उनका सामान्य ज्ञान भी बढ़ता है। इससे छात्रों की व्यक्तिगत योग्यता व अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ती है।

विधि:

अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों को हल करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

1. दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़ना चाहिए।
2. गद्यांश पढ़ते समय मुख्य बातों को रेखांकित कर देना चाहिए।
3. गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर देते समय भाषा एकदम सरल होनी चाहिए।
4. उत्तर सरल व संक्षिप्त व सहज होने चाहिए। अपनी भाषा में उत्तर देना चाहिए।
5. प्रश्नों के उत्तर कम-से-कम शब्दों में देने चाहिए, साथ हीं गद्यांश में से हीं उत्तर छाँटने चाहिए।
6. उत्तर में जितना पूछा जाए केवल उतना हीं लिखना चाहिए, उससे ज़्यादा या कम तथा अनावश्यक नहीं होना चाहिए। अर्थात, उत्तर प्रसंग के अनुसार होना चाहिए।
7. यदि गद्यांश का शीर्षक पूछा जाए तो शीर्षक गद्यांश के शुरु या अंत में छिपा रहता है।
8. मूलभाव के आधार पर शीर्षक लिखना चाहिए।

उदाहरण:

निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. आज आदमी धन के पीछे अंधाधुंध दौड़ रहा है। पाँच रुपये मिलने पर दस, दस मिलने पर सौ, और सौ मिलने पर हज़ार की लालसा लिए वह इस अंधी दौड़ में शामिल है। इस दौड़ का कोई अंत नहीं। धन की इस दौड़ में सभी पारिवारिक और मानवीय संबंध पीछे छूट गए। व्यक्ति सत्य-असत्य, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय और अपने-पराए के भेद-भाव को भूल गया। उसके पास अपनी पत्नी और संतान के लिए भी समय नहीं। धन के लिए पुत्र का पिता के साथ, बेटी का माँ के साथ और पति का पत्नी के साथ झगड़ा हो रहा है। भाई-भाई के खून का प्यासा है। धन की लालसा व्यक्ति को जघन्य से जघन्य कार्य करने के लिए उकसा रही है। इस लालसा का ही परिणाम है कि जगह-जगह हत्या, लूट, अपहरण और चोरी-डकैती की घटनाएँ बढ़ रही हैं। इस रोगी मनोवृत्ति को बदलने के लिए हमें हर स्तर पर प्रयत्न करने होंगे। [redacted]

(क) *आज व्यक्ति किस अंधी दौड़ में शामिल है ?* 1

(ख) *इस दौड़ का मानवीय संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ?* 1

(ग) *यह अंधी दौड़ पारिवारिक जीवन को क्या हानि पहुँचा रही है ?* 1

(घ) *धन की इस अंध लालसा को रोकने के लिए क्या प्रयास करना चाहिए ?* 1

उत्तर–

(क) आज व्यक्ति धन कमाने की अंधी दौड़ में शामिल है।

(ख) धन कमाने की दौड़ से मनुष्य के पारिवारिक संबंध बिखर रहे हैं। सत्य, न्याय, अपनापन आदि मानवीय गुण नष्ट होते जा रहे हैं।

(ग) धन कमाने की अंधी दौड़ से परिवार के आत्मीय सदस्य एक-दूसरे से झगड़ रहे हैं। पिता-पुत्र, माँ-बेटी, भाई-भाई के झगड़े इसी दौड़ के कुपरिणाम हैं।

(घ) धन की अंध लालसा को रोकने के लिए हर स्तर पर हर संभव प्रयास करना चाहिए।

2. गतिशील व्यक्ति और संस्था को चाहिए कि वह निरंतर दो तरह की तुलना करती रहे। अपनी वर्तमान स्थिति की तुलना अपने पिछले दिनों और पिछली स्थिति से तथा अपनी तुलना अपने ही समान स्तर के लोगों, संस्थाओं और संघों से। हम कल कैसे थे ? क्या हमने कल की अपेक्षा अपने को ज्यादा शक्तिशाली, प्राणवान, गतिशील, उपयोगी और आकर्षक बनाया है ? क्या हम अपेक्षाकृत मैले और बासी तो नहीं पड़ गए हैं ? कहीं हम दूसरों की अपेक्षा पिछड़ तो नहीं रहे हैं ? इस बीच दूसरों ने जो आकर्षण, योग्यता और शक्ति अपने में विकसित कर ली है, क्या हम वैसा नहीं कर सके ? हमें कल के लिए अपने में क्या कुछ ऐसा नया और उपयोगी कदम जोड़ देना होगा, जिससे हमारी वर्तमान स्थिति में नया प्राण-प्रवेग आ जाए ? [redacted]

(क) *गतिशील व्यक्ति और संस्था के लिए क्या आवश्यक है ?*

(ख) *हम अपनी पिछली स्थिति के साथ अपनी वर्तमान स्थिति की तुलना किस-किस प्रकार कर सकते हैं ?* 1

(ग) *इस तुलना के पश्चात् हमें क्या क़दम उठाने चाहिए ?* 1

(घ) *इस तुलना से व्यक्ति और संस्थाओं को क्या लाभ होगा ?* 1

उत्तर–

(क) गतिशील व्यक्ति और संस्था के लिए आवश्यक है कि वे अपनी वर्तमान दशा की तुलना अपने पुराने समय से तथा अपने जैसी अन्य संस्थाओं और व्यक्तियों से करते रहें।

(ख) हमें शक्ति, गतिशीलता, उपयोगिता, आकर्षण और नएपन के मामले में वर्तमान काल की तुलना पुराने काल से करनी चाहिए। हमें यह भी देखना चाहिए कि कहीं हम बासी और पिछड़े तो नहीं होते जा रहे।

(ग) वर्तमान और पुराने समय की तुलना के बाद हमें नई चुनौतियों के अनुसार स्वयं को उन्नत बनाना चाहिए।

(घ) इस तुलना से व्यक्ति और संस्थाएँ–दोनों वर्तमान में भी उन्नत, प्रगतिशील, आकर्षक, प्राणवान और उपयोगी बनी रहेंगी।